प्रेस विज्ञप्ति

आचार्य महाप्रज्ञ चातुर्मास व्यवस्था समिति

सरदारशहर 331 401

वैर को मैत्री से शांत किया जा सकता है : आचार्य महाश्रमण

सरदारशहर 31 मई, 2010

आदमी के भीतर राग और द्वेष की दो वृतियां होती है जो व्यक्ति इन वृतियों से मुक्त होता है वह वीतराग बन जाता है, गीता की भाषा में वह स्थितप्रज्ञ बन जाता है। जिस व्यक्ति में राग-द्वैष के भाव प्रबल होते हैं तो अपने लिए बुरा करने वाले के प्रति वैर भाव जाग जाता है। वैर शांत नहीं होता है जब वैर शांत नहीं होता है तो वह वैर आगे से आगे अगले जन्मों तक बढ़ता चला जाता है।

उक्त विचार आचार्यश्री महाश्रमण ने किशनलाल नाहटा के निवास पर धर्म सभा को संबोधित करते हुए व्यक्त किये।

आचार्य महाश्रमण ने आचार्य भिक्षु के सिद्धातों को प्रतिपादित करते हुए कहा कि आचार्य भिक्षु ने कहा था कि मित्र से मित्रता और वैर से वैर आगे से आगे बढ़ता जाता और वह अगले जन्म में भी बना रहता है।

आचार्यश्री महाश्रमण ने आगे कहा कि वैर से वैर को शांत नहीं किया जा सकता। वैर को मैत्री से शांत किया जा सकता है। एक अहिंसक व्यक्ति के संपर्क में कोई हिंसक व्यक्ति आता है तो उसका हिंसा का भाव छूट जाता है।

इस अवसर पर छापर से समागत तेरापंथ सभा, तेरापंथ युवक परिषद द्वारा आचार्य महाश्रमण को अभिननन्दन पत्र भेंट किया गया। जिसका वाचन जीवणमल मालू ने किया। संचालन मुनि दिनेश कुमार ने किया।

जीवन विज्ञान सघन प्रशिक्षण शिविर सज़्पन्न

जैन विश्व भारती द्वारा आयोजित जयन्तीलाल, विजयकुमार सुयस सुराणा द्वारा प्रायोजित मुनि किशनलाल के निर्देशन में चलने वाले 13 दिवसीय (19 से 31 मई) जीवन विज्ञान सघन प्रशिक्षण शिविर आज सज़्पन्न हुआ, इस शिविर में 48 शिविरार्थियों ने भाग लिया। समापन समारोह के अवसर पर आचार्यश्री महाश्रमण ने कहा कि जीवन विज्ञान का संदेश है कि भावात्मक परिशोध का अज़्यास करें, उन्होंने जीवन विज्ञान की सघन साधना के पांच सूत्रों में भाव क्रिया का अज़्यास, मैत्री का व्यवहार, मिताहार का अज़्यास, मित भाषण का व्यवहार आदि का उल्लेख करते हुए निरंतर प्रयोग करने की चर्चा करते हुए कहा कि इसका निरंतर प्रयोग करने से व्यक्ति के जीवन में बदलाव आता है और अपने जीवन को अच्छा बना सकता है।

इस अवसर पर मुनि किशनलाल ने अपने विचार व्यक्त किये, मुनि नीरज कुमार ने गीत के द्वारा प्रस्तुति दी। इस अवसर पर समण सिद्धप्रज्ञ, डॉ. ललित किशोर, श्रीमती इन्दिरा शर्मा, धीरेन्द्र कुमार, वेनीराम वर्मा, दानमल पोरवाल, प्रायोजक जयन्तीलाल सुराणा, हेमन्त उपाध्याय, डॉ. अंशुमान शर्मा, हनुमान शर्मा आदि ने अपने विचारों की अभिव्यक्ति दी। शिविर को सफल बनाने में गिरीजाशंकर दूबे, महेन्द्रसिंह आदि का श्रम नियोजित हुआ।

शीतल बरड़िया